राजस्थान के प्रसिद्ध कलाकार- एक नजर में राजस्थान के प्रसिद्ध कलाकार- एक नजर में

1- गणपत लाल डांगी – नाटक, गायन व लेखन

2- गवरी देवी - मांड गायन

3- अल्लाह जिलाई बाई - मांड गायन

4- बन्नो बेगम - मांड गायन

5- पेपे खां - सुरणाई वादन

6- मांगीबाई - तेरहताली नृत्य

7- चांद मोहम्मद खान - शहनाई वादन

8- विद्यासागर उपाध्याय - चित्रकला

9- पं. द्वारका प्रसाद शर्मा - चित्रकला

10- रामेश्वर सिंह - चित्रकला

11- बी. जी. शर्मा - चित्रकला

12- पी. एन. चोयल - चित्रकला

13- लालचंद मारोठिया - चित्रकला

14- अब्बास अली बाटलीवाला - चित्रकला

15- हेमंत चित्रकार (शर्मा) - चित्रकला

16- पी. पी. कोटावाला - चित्रकला

17- भूरसिंह शेखावत - चित्रकला

18- ए. एच. मूलर - चित्रकला

19- कुंदनलाल - चित्रकला

20- रामगोपाल विजयवर्गीय - चित्रकला

21- बी. सी. गुई - चित्रकला

22- गोवर्द्धन लाल जोशी 'बाबा' - चित्रकला

23- रामनिवास शर्मा - चित्रकला

24- देवकीनंदन शर्मा - चित्रकला

www.kushmanda.com

25- जगदीश सिंह गहलोत - चित्रकला

26- मोनी सान्याल - चित्रकला

27- घासीराम - चित्रकला

28- नरोत्तम नारायण शर्मा - चित्रकला

29- डॉ. नाथूराम वर्मा - चित्रकला

30- कृपालसिंह शेखावत - ब्लू पॉटरी व चित्रकला

31. श्रीलाल जोशी - फड़ चित्रकला

32- हिसामुद्दीन उस्ता - चमड़े पर स्वर्ण चित्रकारी (उस्ता कला)

33- जहीरुद्दीन उस्ताद - उस्ता कला

34- जानकी लाल भांड - बहुरूपिया कला

35- अल्लादिया खां - संगीत

36- डॉ. जयचंद्र शर्मा - संगीत

37- विश्व मोहन भट्ट - गिटार वादन एवं मोहन वीणा वादन

38- हमीदुल्ला - नाट्यकला

39- पी. सुंदर - नाट्य

40- बी. एम. व्यास - फिल्म अभिनेता

41- कन्हैयालाल पंवार – नाट्यकला, फिल्म

42- भानुभारती - नाट्यकला

43- मास्टर गिर्राज - नौटंकी कला

44- नानालाल गंधर्व - तुर्रा ख्याल नाट्य

45- पं. जसकरण गोस्वामी - सितार वादन

46- उस्ताद अमीर मोहम्मद खां - तबला वादन

47- जहूर खां मेवाती - भपंग वादन

48- रामकिशन सोलंकी - नगाड़ा वादन

49- पुरूषोत्तम दास - पखावज वादन

www.kushmanda.com

50- सद्दीक खां - खड़ताल वादन

51- साकर खां - कमायचा वादन

52- करणा भील - नड़ वादन

53- शंकर बुलंद - नस तरंग वादन

54- पं. रामनारायण - सारंगी वादन

55- उस्ताद सुल्तान खान - सारंगी वादन

56- भवानी शंकर कथक - पखावज वादन तथा तबला वादन

57- खलीफा करीम खां निहंग - चारबैत गायन

58- प्रभातजी सुथार - कावड़ काष्ठ कला

59- शकुंतला पंवार - लोकनृत्य

60- लल्लूनारायण शर्मा - मूर्तिकला व चित्रकला

61- ज्ञानसिंह - मूर्तिकला

62- मातुराम शर्मा - मूर्तिकला

63- उषारानी हूजा - मूर्तिकला

64- अर्जुनलाल प्रजापति - मृण मूर्तिकला

65- कुदरत सिंह - मीनाकारी

66- पं. उदयशंकर - बैले नृत्य

67- बाबूलाल कथक - कथक नृत्य

68- देवीलाल सामर - लोककला विद्

69- कोमल कोठारी - लोककला विद्

70- पं. भरत व्यास - फिल्म गीतकार, निर्देशकव नाटककार

www.kushmanda.com

राजस्थान के रीति-रिवाज

आठवाँ पूजन

स्त्री के गर्भवती होने के सात माह पूरे कर लेती है तब इष्ट देव का पूजन किया जाता है और प्रीतिभोज किया जाता है।

पनघट पूजन या जलमा पूजन

बच्चे के जन्म के कुछ दिनों पश्चात (सवा माह बाद) पनघट पूजन या कुआँ पूजन की रस्म की जाती है इसे जलमा पूजन भी कहते हैं।

आख्या

बालक के जन्म के आठवें दिन बहनेजच्चा को आख्या करती है और एक मांगलिक चिह्न 'साथिया' भेंट करती है।

जडूला उतारना

जब बालक दो या तीन वर्ष का हो जाता है तो उसके बाल उतराए जातेहैं। वस्तुतः मुंडन संस्कार कोही जडूला कहते हैं।

सगाई

वधू पक्ष की ओर से संबंध तय होने पर सामर्थ्य अनुसार शगुन के रुपये तथा नारियल दिया जाता है।

बिनौरा

सगे संबंधी व गाँव के अन्य लोग अपने घरों में वर या वधू तथा उसके परिवार को बुला कर भोजन कराते हैं जिसे बिनौरा कहते हैं।

तोरण

यह जब बारात लेकर कन्या के घर पहुँचता है तो घोड़ी पर बैठे हुएही घर के दरवाजे पर बँधे हुए तोरण को तलवार से छूता है जिसे तोरण मारना कहते हैं। तोरण एक प्रकार का मांगलिक चिह्न है।

खेतपाल पूजन

www.kushmanda.com

राजस्थान में विवाह का कार्यक्रम आठ दस दिनों पूर्व ही प्रारंभ हो जाते हैं। विवाह से पूर्व गणपति स्थापना से पूर्व के रविवार को खेतपाल बावजी (क्षेत्रपाल लोकदेवता) की पूजा की जाती है।

कांकन डोरडा

विवाह से पूर्व गणपति स्थापना के समय तेल पूजन कर वर या वधू केदाएँ हाथ में मौली या लच्छा को बंट कर बनाया गया एक डोरा बाँधते हैं जिसे कांकन डोरडा कहते हैं। विवाह के बाद वर के घर में वर-वधू एक दूसरे के कांकन डोरडा खोलते हैं।

बान बैठना व पीठी करना

लग्नपत्र पहुँचने के बाद गणेश पूजन (कांकन डोरडा) पश्चात विवाह से पूर्व तक प्रतिदिन वर व वधू को अपने अपने घर में चौकी पर बैठा कर गेहूँ का आटा, बेसन में हल्दी व तेल मिला कर बने उबटन (पीठी) से बदन को मला जाता है, जिसको पीठी करना कहते हैं। इस समय सुहागन स्त्रियाँ मांगलिक गीत गाती है। इस रस्म को 'बान बैठना' कहते हैं।

बिन्दोली

विवाह से पूर्व के दिनों में वरव वधू को सजा धजा और घोड़ी पर बैठा कर गाँव में घुमाया जाता है जिसे बिन्दोली निकालना कहतेहैं।

मोड़ बाँधना

विवाह के दिन सुहागिन स्त्रियाँ वर को नहला धुला कर सुसज्जित कर कुलदेवता के समक्षचौकी पर बैठा कर उसकी पाग पर मोड़ (एक मुकुट) बांधती है।

बरी पड़ला

विवाह के समय बारात के साथ वर के घर से वधू को साड़ियाँ व अन्य कपड़े, आभूषण, मेवा, मिष्ठान आदि की भेंट वधू के घर पर जाकर दी जाती है जिसे पड़ला कहते हैं। इसभेंट किए गए कपड़ों को 'पड़ले का वेश' कहते हैं। फेरों के समय इन्हें पहना जाता है।

मारत

www.kushmanda.com

विवाह से एक दिन पूर्व घर में रतजगा होता है, देवी-देवताओं कीपूजा होती है और मांगलिक गीत गाए जाते हैं। इस दिन परिजनों को भोजन भी करवाया जाता है। इसेमारत कहते हैं।

पहरावणी या रंगबरी

विवाह के पश्चात दूसरे दिन बारात विदा की जाती है। विदाई में वर सहित प्रत्येक बाराती को वधूपक्ष की ओर से पगड़ी बँधाईजाती है तथा यथा शक्ति नगद राशिदी जाती है। इसे पहरावणी कहा जाता है।

सामेला

जब बारात दुल्हन के गांव पहुंचती है तो वर पक्ष की ओर से नाई या ब्राह्मण आगे जाकर कन्यापक्ष को बारात के आने की सूचना देता है। कन्या पक्ष की ओर उसे नारियल एवं दक्षिणा दी जाती है। फिर वधू का पिता अपने सगे संबंधियों के साथ बारात का स्वागत करता है, स्वागत की यह क्रिया सामेला कहलाती है।

बढार

विवाह के अवसर पर दूसरे दिन दिया जाने वाला सामूहिक प्रीतिभोज बढार कहलाता है।

कुँवर कलेवा

सामेला के समय वधू पक्ष की ओर से वर व बारात के अल्पाहार के लिए सामग्री दी जाती है जिसे कुँवर कलेवा कहते हैं।

बींद गोठ

विवाह के दूसरे दिन संपूर्ण बारात के लोग वधू के घर से कुछ दूर कुएँ या तालाब पर जाकर स्थान इत्यादि करने के पश्चात अल्पाहार करते हैं जिसमें वर पक्ष की ओर से दिए गए कुँवर-कलेवे की सामग्री का प्रयोग करते है। इसे बींद गोठ कहते हैं।

मायरा

राजस्थान में मायरा भरना विवाहके समय की एक रस्म है। इसमें बहन अपनी पुत्री या पुत्र का विवाह करती है तो उसका भाई अपनीबहन को मायरा ओढ़ाता है जिसमें वह उसे

www.kushmanda.com

कपड़े, आभूषण आदि बहुत सारी भेंट देता है एवं उसे गले लगाकर प्रेम स्वरुप चुनड़ी ओढ़ाता है। साथ ही उसके बहनोई एवं उसके अन्य परिजनों को भी कपड़े भेंट करता है।

डावरिया प्रथा

यह रिवाज अब समाप्त हो चुका है।इसमें राजा-महाराजा और जागीरदार अपनी पुत्री के विवाहमें दहेज के साथ कुँवारी कन्याएं भी देते थे जो उम्र भर उसकी सेवा में रहती थी। इन्हें डावरिया कहा जाता था।

नाता प्रथा

कुछ जातियों में पत्नी अपने पति को छोड़ कर किसी अन्य पुरुष के साथ रह सकती है। इसे नाता करना कहते हैं। इसमें कोई औपचारिक रीति रिवाज नहीं करना पड़ता है। केवल आपसी सहमति ही होती है। विधवा औरतें भी नाता कर सकती है।

नांगल

नवनिर्मित गृहप्रवेश की रस्म को नांगल कहते हैं।

मौसर

किसी वृद्ध की मृत्यु होने पर परिजनों द्वारा उसकी आत्मा की शांति के लिए दिया जाने वाला मृत्युभोज मौसर कहलाता है।

www.kushmanda.com

राजस्थान के प्रसिद्ध साके एवं जौहर-

राजस्थान के गौरवशाली इतिहास में "जौहर तथा साकों" का अत्यंतविशिष्ठ स्थान है। यहाँ के रणबाँकुरे वीर राजपूत सैनिकों तथा उनकी स्त्रियों ने पराधीनता को स्वीकार करने की बजाए सहर्ष मृत्यु का आलिंगन करते हुए अपनी जान मातृभूमि पर न्यौछावर कर दी। जौहर व साका उसस्थिति में किए गए जब शत्रु को घेरा डाले बहुत अधिक दिन हो गए और अब युद्ध लड़े बिना नहीं रहा जा सकता। जौहर- युद्ध के बाद महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों व व्यभिचारों से बचने तथा अपनी पवित्रता कायम रखने हेतु महिलाएं अपने कुल देवी-देवताओं की पूजा करके जलती चिताओं में कूद पड़ती थी। वीरांगना महिलाओं का यह आत्म बलिदान का कृत्य जौहर के नाम इतिहास में विख्यात हुआ। साका- महिलाओं को जौहर की ज्वाला में कूदने का निश्चय करते देख पुरूष केशरिया वस्त्र धारण कर मरने मारने के निश्चय के साथ दुश्मन सेना पर टूट पड़ते थे। इसे साका कहा जाता है।

1. चित्तौड़गढ़ के साके- चित्तौड़ में सर्वाधिक तीन साकेहुए हैं। > प्रथम साका- यह सन् 1303 में राणा रतन सिंह के शासनकाल में अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़ पर आक्रमण के समय हुआ था। इसमें रानी पद्मनी सहित स्त्रियों ने जौहर किया था। > द्वितीय साका- यह 1534 ईस्वी में राणा विक्रमादित्य के शासनकाल में गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह के आक्रमण के समय हुआ था। इसमेंरानी कर्मवती के नेतृत्व में स्त्रियों ने जौहर किया था। तृतीय साका- यह 1567 में राणा उदयसिंह के शासनकाल में अकबर के आक्रमण के समय हुआ था जिसमें जयमल और पत्ता के नेतृत्व में चित्तौड़ की सेना ने मुगल सेना का जमकर मुकाबला किया और स्त्रियों ने जौहर किया था।

2. जैसलमेर के ढाई साके- जैसलमेर में कुल ढाई साके होना माना जाता है। इसके तीसरे साके में वीरों ने केसरिया तो किया था किन्तु जौहर नहीं हुआ इस कारण इसको अर्ध साका कहा जाता है। > प्रथम साका- यह अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय हुआ था। > द्वितीय साका- यह फिरोजशाह तुगलक के आक्रमण के समय हुआ। > तृतीय

साका (अर्ध साका)- यह लूणकरण के शासन काल में कंधार के शासक अमीर अली के आक्रमण के समय हुआ था।

3. गागरोण के किले के साके- > प्रथम साका- 1423 ईस्वी में अचलदास खींची के शासन काल में माण्डू के सुल्तान होशंगशाह के आक्रमण केसमय हुआ था। > द्वितीय साका- यह सन् 1444 में माण्डू के सुल्तान महमूद खिलजी के आक्रमणके समय हुआ था।

4. रणथंभौर का साका- यह सन् 1301 में अलाउद्दीन खिलजी के ऐतिहासिक आक्रमण के समय हुआ था। इसमें हम्मीर देव चौहान विश्वासघात के परिणामस्वरूप वीरगति को प्राप्त हुआ तथा उसकी पत्नी रंगादेवी ने जौहर किया था। इसे राजस्थान के गौरवशाली इतिहास का प्रथम साका माना जाता है।

5. जालौर का साका- कान्हड़देव के शासनकाल में 1311 - 12 में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय हुआ था।

www.kushmanda.com